और... एक शेर

रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल
जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है
-मिर्ज़ा ग़ालिब

लोकमत समाचार
नागपुर, गुरुवार, 2 जुलाई 2015

लोकमत समाचार
तमसो मा ज्योतिर्गमय

{ आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत, असफलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है. ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है. ■ अब्दुल कलाम }

संपादकीय

सामने आ रहे घोटालों का संकेत क्या है?

राष्ट्रीय स्तर पर मुश्किलों में घिरने के साथ ही अब महाराष्ट्र में भी भाजपा की कठिनाइयां बढ़ती जा रही हैं. महाराष्ट्र की महिला और बाल विकास मंत्री पंकजा मुंडे के चिक्की घोटाले में फंसने के बाद अब राज्य के शालेय शिक्षा मंत्री विनोद तावड़े पर 191 करोड़ रु. के ठेके को बिना निविदा के मंजूरी देने के आरोप लगे हैं. तावड़े पर आरोप है कि उनके विभाग ने स्कूलों के लिए आग बुझाने वाले यंत्र की खरीद का ठेका बिना ई-टेंडरिंग के ही ठाणे की एक कंपनी को दे दिया. ये कंपनी महाराष्ट्र सरकार की लिस्ट में शामिल भी नहीं थी. भाजपा की दो कद्दावर महिलाओं विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के ललित मोदी प्रकरण में फंसने तथा केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी के अपनी शैक्षिक योग्यता के बारे में विरोधाभासी जानकारी देने से पहले ही विश्वसनीयता का संकट झेल रही भाजपा के महाराष्ट्र में भी दो मंत्रियों के विवादों में आने के बाद जनता अब यह सोचने पर मजबूर हो गई है कि पिछली कांग्रेस सरकार के शासन और वर्तमान भाजपा सरकार में फर्क क्या रह गया है? भाजपा और नरेंद्र मोदी के बारे में कुछ नकारात्मक बातों को भी दरकिनार कर, घोटालों से तंग आ चुकी जनता ने उन्हें इस उम्मीद में चुना था कि स्वच्छ प्रशासन मिलेगा. अब जनता अपने आपको छला हुआ महसूस कर रही है. हालांकि तावड़े ने आरोपों से इनकार करते हुए कहा है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में कोई अनियमितता नहीं हुई है. चिक्की घोटाले में फंसने के बाद पंकजा मुंडे ने भी कहा है कि वे अपने खिलाफ साजिश का पर्दाफाश करेंगी. सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे और स्मृति ईरानी का भी केंद्र सरकार तथा भाजपा बचाव करती रही हैं. यानी भाजपा मान ही नहीं रही है कि उसके मंत्रियों ने कुछ गलत किया है. फिर सुधार की गुंजाइश ही कहां रह जाती है! जबकि अगर धुआं उठ रहा है तो कहीं न कहीं तो आग होगी ही. नेताओं को पाक-साफ होना ही नहीं बल्कि दिखना भी चाहिए. क्या भाजपा का यह दायित्व नहीं बनता कि वह घोटालों की आग के उस स्रोत की खोज करे? नरेंद्र मोदी के स्वच्छ प्रशासन के दावे की क्या यही परिणति होनी थी? 'न खाऊंगा न खाने दूंगा' की उनकी दहाड़ कहां खो गई? अगर सारे मंत्री पाक-साफ हैं तो मोदी मौन क्यों हैं? प्रधानमंत्री को समझना चाहिए कि उन्हें सत्ता में लाने में सबसे बड़ी मदद उनके स्वच्छ प्रशासन के दावे ने ही की थी. राज्यों में भी जहां भाजपा सत्ता में आई है, उसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्वच्छ और कठोर प्रशासक की छवि का बहुत बड़ा हाथ रहा है. अब, जब वह छवि तार-तार हो रही है, तब भी मोदी की चुप्पी नहीं टूटेगी तो जनता का विश्वास भी चूर-चूर होते देर नहीं लगेगी. भाजपा को समझना चाहिए कि घोटालों से तंग आकर जनता ने अगर चुनावों में कांग्रेस को नकार दिया था तो उसे मौका मिलने पर भाजपा को भी जमीन सुंघाते देर नहीं लगेगी. अगर उसके नेता बेदाग हैं तो मामलों की निष्पक्ष जांच कराकर जनता के सामने पारदर्शी तरीके से उनकी निर्दोषिता को दिखाया जाना चाहिए और यदि दोषी हैं तो उन्हें उसकी सजा मिलनी चाहिए. बिना सबूतों के बचाव करने या चुप्पी साधने से काम नहीं चलेगा. ■■

राज-परिवार बनाम वानप्रस्थ

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

घर के झगड़े सार्वजनिक होने पर परिवार का नाम कुछ तो बदनाम होता ही है. इसे झगड़ा भले ही न कहें, दिल-दिमाग में घूमता कष्ट, नाराजगी सामने आने से पड़ोसी, परिचित-अपरिचित, मित्र-विरोधी कहीं चर्चा करेंगे, अफसोस जताएंगे, हंसेंगे-व्यंग्य करेंगे. इसे जग-हंसाई तो माना ही जाएगा. इन दिनों संघ-भाजपा राज-परिवार के बुजुर्ग नेताओं की सार्वजनिक टिप्पणियों से कुछ ऐसे ही दृश्य देखने-सुनने को मिल रहे हैं.वे दिन लद गए, जब नेहरू, पटेल, शास्त्रीजी ही नहीं इंदिरा गांधी के सत्ता काल में भी संसदीय दल अथवा कांग्रेस सम्मेलनों में सरकार और पार्टी की आलोचना करने वालों को समय और महत्व मिलता था. जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, मोरारजी देसाई, दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, कुशाभाऊ ठाकरे के नेतृत्व काल में भी मैंने पार्टी की कमियों, सत्तारूढ़ नेताओं की गलतियों-गड़बड़ियों की चर्चा सुनी है. कुशाभाऊ ठाकरे ने तो मेरे साथ एक टीवी इंटरव्यू में भी अपने साथियों की कमियों को स्पष्ट रूप से स्वीकारा. अटलजी कहा करते थे कि 'हमने सबको खरीदा थोड़े ही है और न ही हम किसी गिरोह के सरगना हैं - जो किसी को असहमत होने पर बाहर फेंक दें.' लेकिन आज भाजपा में कितने मंत्री, सांसद, विधायक या पार्टी पदाधिकारी बंद कमरे में भी नेतृत्वकर्ता 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश' को कड़वी बात सुना सकते हैं?

भाजपा राज परिवार के कुछ बुजुर्ग नेताओं ने अवश्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कुछ चिंताएं खुलकर सामने रखी हैं. पूर्व अध्यक्ष और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने इमरजेंसी की प्रवृत्ति, राज-धर्म की नैतिकता की बात कही. उन्होंने न कोई नाम लिया और न ही अपनी सरकार पर सीधा हमला किया. यदि भाजपा सत्ता में नहीं होती, तो उनकी ऐसी टिप्पणियों को आदर्श राजनेता की तरह ग्रहण कर लिया जाता. लेकिन भाजपा के कुछ नेताओं ने कैमरे से हटकर अवश्य आलोचना की और सत्ता-सुख से दूरी का कष्ट बताते हुए निरर्थक कहा. भाजपा में सत्ता-सुख के लिए आए पूर्व सरकारी अफसर यशवंत सिन्हा ने अपनी नाराजगी के डिब्बे में सारे बुजुर्गों के आंसू भरकर उछाल दिए. यशवंत सिन्हा का मानना है कि भाजपा नेतृत्व ने '75 वर्ष से अधिक आयुवालों को ब्रेन डेड' जैसा घोषित कर दिया है. समय की पहचान रखने वाले बुजुर्ग नेता मुरली मनोहर जोशी, कलराज मिश्र और विभिन्न प्रदेशों के वरिष्ठ नेता सार्वजनिक रूप से कोई टिप्पणी नहीं कर रहे, लेकिन बंद कमरों में सरकार-पार्टी की सेहत पर दुखड़ा सुनाते हैं.

> आज भाजपा में कितने मंत्री, सांसद, विधायक या पार्टी पदाधिकारी बंद कमरे में भी नेतृत्वकर्ता 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश' को कड़वी बात सुना सकते हैं?

दूसरी तरफ, भाजपा पर राज परिवार की 'सिंहासन बत्तीसी' की आवाज सुनी जाए, तो यह समझने की जरूरत है कि 'भाजपा संगठन में रहते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 'हिंदू-दर्शन' को क्या भुलाया जा सकता है? हिंदू दर्शन की संस्कृति में चार आश्रम के प्रावधान हैं. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास. इस दर्शन के अनुसार महान ज्ञाता होते हुए भी 60 से 75 वर्ष की आयु के दौरान लोग पहले वानप्रस्थ और फिर संन्यास स्वीकार कर लेते थे. यह तो वर्तमान भाजपा नेतृत्व की 'महान उदारता' है कि उन्होंने 70 से अधिक आयु वाले नेताओं को 'वन' या 'आश्रम' में नहीं भेजा तथा राज दरबार में 'मौन मार्गदर्शक' का आसन सम्मानपूर्वक दे रखा है. मार्गदर्शक अपनी सलाह फेसबुक, ट्विटर पर न भेजना चाहें, तो टंकित या हस्तलिखित पत्र के रूप में भी 7, रेसकोर्स रोड के स्वागत कक्ष पर स्वीकार कर लिए जाएंगे. इसी तरह संघ-भाजपा परिवार के संरक्षकों की सलाह के लिए समय-समय पर राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी को वंदना के लिए नागपुर भेजा ही जा रहा है तथा गुरु दक्षिणा स्वरूप संघ की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है. राजधानी दिल्ली में नागपुर से भी अधिक भव्य और अत्याधुनिक संघ-भवन के निर्माण के कार्य में सत्ताधारी सदस्यों का संपूर्ण योगदान मिल रहा है और मिलता रहेगा. मंत्री-संतरी कोई भी हो, संघ के भगवा ध्वज को दुनिया भर में फैले भारतवंशियों के बीच पहुंचाने, उन्हें हिंदू-संस्कृति और दर्शन से जोड़े रखकर पूंजी निवेश करवाने के लिए संघ-भाजपा के पसंदीदा प्रतिनिधियों की धुंआधार यात्राएं भी जारी रहने वाली हैं. इसलिए सिंहासन बत्तीसी का आग्रह यही है कि 'गृह-कलह को सार्वजनिक न होने दें और अपने आचरण को धर्म के मूल-मंत्रों के अनुरूप रखें.' वैसे रामराज्य में भी सिंहासन को लेकर वनवास की व्यवस्था पढ़ने-सुनने को मिलती ही है. ■■

भाजपा में घबराहट

नजरिया उर्दू प्रेस का

■ राजश्री यादव

भाजपा नेत्री सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे सिंधिया, स्मृति ईरानी और पंकजा मुंडे को लेकर भाजपा और केंद्र सरकार की हो रही फजीहत पर उर्दू मीडिया का कहना है कि इस मामले ने एक बार फिर लोगों को ये सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या सियासी जिंदगी में ईमान नाम की कोई चीज बाकी है?

'उर्दू टाइम्स' मुंबई ने लिखा है, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया जैसी भाजपा की कद्दावर महिला नेताओं की ओर से आईपीएल के पूर्व कमिश्नर ललित मोदी को मदद पहुंचाने के आरोप की वजह से भाजपा काबीना बैकफुट पर है. इसी तरह केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी फर्जी डिग्री के झमेले में फंसी हुई हैं और महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना युति सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे 206 करोड़ रुपए के खरीदी घोटाले में लिप्त बताई जा रही हैं. इन मामलों की परत-दर-परत सामने आने से भाजपा के खेमे में काफी घबराहट है और वह रुक-रुक कर कभी सुषमा स्वराज को और कभी वसुंधरा राजे को पद से हटाने पर गौर करती है और फिर जल्दी से कदम पीछे खींच लेती है क्योंकि ये औरतें भाजपा की तोप समझी जाती हैं. लिहाजा, उन्हें इन आरोपों से साफ बचा ले जाने की भी कोशिश हो रही है. क्योंकि भाजपा इस मामले को उलझाकर गोल कर जाना चाहती है. इसीलिए तो उसकी तरफ से ललित मोदी और गांधी खानदान के बीच ताल्लुक होने का आरोप लगाया जा रहा है. अखबार ने लिखा है, हठधर्मी पर आमादा भाजपा को शायद याद नहीं कि एनडीए की वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में तहलका स्कैंडल की जद में आने वाले बंगारू लक्ष्मण को मंत्री पद से हाथ धोना पड़ा था. अगर गलती करने वालों को एनडीए सजा देने नहीं देगा तो उससे सत्ता छीनकर अवाम उसे सजा देगी.

ललित मोदी अपनी गर्दन बचाने और विभिन्न पार्टियों को आपस में भिड़ाने के लिए ट्वीट करके लंदन में प्रियंका गांधी और उनके पति रॉबर्ट वाड्रा से मुलाकात के दावे कर रहे हैं.

'इंकलाब डेली' दिल्ली संस्करण ने लिखा है, अगर कोई ये समझता है कि भाजपा के महासचिव राम माधव ने प्रोटोकॉल के तकाजों से अनभिज्ञता के चलते उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के खिलाफ ट्वीट करते हुए ये सवाल किया था कि वे राजपथ पर योग में क्यों शरीक नहीं हुए तो ऐसा समझना हिमाकत होगी. राम माधव का ट्वीट न तो अनभिज्ञता का नतीजा था, न ही किसी गलतफहमी का. ये शरारत थी. विश्व योग दिवस पर आयोजित मोदी सरकार के ग्रैंड शो में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी भी शामिल नहीं हुए थे. अगर राम माधव प्रोटोकॉल से अनभिज्ञ होते तो उन्हें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति दोनों की गैरहाजिरी खलती लेकिन उन जैसों की निगाहें तो हर वक्त अल्पसंख्यकों पर होती हैं, ताकि उनकी आलोचनाओं का कोई मौका हाथ से न निकल जाए. अखबार ने लिखा है प्रधानमंत्री को एनडीए के शासनकाल में बार-बार होने वाले ऐसे तमाशों पर कड़ाई से रोक लगानी चाहिए. ■■

और अंत में...

हमारे ही नुमाइंदों ने हम को
नए अंदाज में तोहफे दिए हैं
फकत बिजली नहीं छिनी है हमसे
उम्मीदों के दीये भी गुल किए हैं
(साभार 'डेली उम्मत' कराची)

नजर के पार

कर्ज-जाल से मुक्ति है ग्रीस का इलाज

मुकेश कुमार
जाने-माने पत्रकार

ग्रीस सरकार और ग्रीक जनता, दोनों इस समय एक बेहद कठिन अग्निपरीक्षा से गुजर रहे हैं. यूरोपीय समुदाय, यूरोपीय सेंट्रल बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की कुख्यात तिकड़ी ने उन्हें ऐसी जगह पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां एक तरफ कुआं है तो दूसरी ओर खाई. उनके सामने मुश्किल ये भी है कि वे अपनी जगह पर खड़े भी नहीं रह सकते. उन्हें दोनों में से एक को चुनना ही होगा. तय करना होगा कि वे तिकड़ी की शर्तों को मानकर अपना जीवन कष्टमय बनाना चाहते हैं या फिर न मान कर. दोनों ही सूरतों में उन्हें मुश्किलों का सामना करना होगा. अलबत्ता दूसरे विकल्प मे वे अपना आत्मसम्मान बचा सकते हैं, बचने का दूसरा रास्ता तलाश सकते हैं. लेकिन सवाल उठता है कि इतना आत्मबल और संयम क्या ग्रीक जनता में है?

वैसे ये परीक्षा केवल उन्हीं के लिए नहीं है, यूरोपीय समुदाय का नेतृत्व करने वाले देशों के लिए भी है, क्योंकि अगर ग्रीस को साथ रखने में वे नाकाम रहे तो पहले से ही प्रश्नचिह्नों से घिरी यूरोपीय यूनियन की अवधारणा खतरे में पड़ जाएगी. उसका विखंडन शुरू हो जाएगा और साझा मुद्रा के रूप में यूरो का भविष्य भी खतरे में पड़ सकता है. दूसरी ओर अगर वे ग्रीस के मामले में लचीला रुख दिखाते हैं, तो उन्हें ऐसे अन्य आधा दर्जन देशों के लिए भी नरमी बरतनी होगी जो दिवालियापन के कगार पर पहुंच गए हैं या पहुंचते हुए नजर आ रहे हैं. स्पेन, इटली आदि इस फेहरिस्त में सबसे ऊपर हैं.

एक चुनौती विश्व बिरादरी के लिए भी है, क्योंकि यूरोप में अगर इस तरह का संकट आकार लेता है तो वह यूरोप तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उसका असर दुनिया भर में दिखेगा. वैसे ही विश्व अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है और यूरोप में तो मंदी का असर सबसे ज्यादा दिख रहा है. वह दो फीसदी के करीब रह गई है. अब अगर वहां की अर्थव्यवस्था और डगमगाई तो शेष विश्व कैसे बचा रह सकता है. बेशक अमेरिका अभी खुद को चिंतामुक्त दिखाने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था में हल्का सा सुधार हुआ है, लेकिन यूरोप में अपने मित्र देशों की मुश्किलें बढ़ने से वह लंबे समय तक निश्चिंत नहीं रह सकेगा.

हालांकि प्रधानमंत्री एलेक्सेई त्सिपरास के नेतृत्व वाली सिराजा सरकार ने 30 जून तक की तय मियाद के भीतर कर्ज की किस्त अदा न करके और पांच जुलाई को जनमत संग्रह कराने की घोषणा करके स्पष्ट कर दिया है कि वह घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं है. जनवरी में वह यही वादा करके आई थी कि संकट के समाधान के नाम पर खर्च में कटौती की जो शर्तें कर्ज देने वाली संस्थाएं लगा रही हैं, वह उन्हें नहीं मानेगी. ये शर्तें बेहद कड़ी और दम घोंटने वाली थीं. पिछले छह वर्षों में दो बार

> आज अगर ग्रीस को संकट से सचमुच में उबारना है तो उसे कर्ज के जाल से निकालना होगा. लेकिन हो उलटा रहा है.

2010 एवं 2012 में तिकड़ी ने ग्रीस को जो कर्ज दिया, उसके एवज में ढेर सारे अमानवीय परिवर्तन थोप दिए. इन्होंने मध्यम और निचले वर्ग को बदहाल कर दिया था. बेरोजगारी की दर पचीस फीसदी तक पहुंच गई थी. यही नहीं, ग्रीक अर्थव्यवस्था भी एक चौथाई तक सिकुड़ चुकी थी. यहां तक कि स्वास्थ्य सेवाओं को भी नहीं बख्शा गया था. लोगों के वेतन में तीस फीसदी की कटौती और करों में एकमुश्त बढ़ोत्तरी कर दी गई थी. आज अगर ग्रीस को संकट से सचमुच में उबारना है तो उसे कर्ज के जाल से निकालना होगा. लेकिन हो उलटा रहा है. उसे कर्ज चुकाने के लिए और अधिक कर्ज लेने तथा और अधिक कड़ी शर्तें कबूल करने के लिए मजबूर किया जा रहा है. सिराजा सरकार बार-बार कह रही है कि वह कर्ज चुकाने के लिए प्रतिबद्ध है मगर उसे वक्त दिया जाए और ग्रीक जनता पर इतना बोझ न डाला जाए कि उसका जीना ही दूभर हो जाए. लेकिन साहूकारों को ये बात समझ में नहीं आ रही, क्योंकि वे उनकी आखिरी बूंद तक चूसने पर आमादा हैं. ■■

चीन की धोखेबाजी से सतर्क रहना जरूरी

गौरीशंकर राजहंस
पूर्व सांसद एवं पूर्व राजदूत

हम चाहे न मानें पर सारी दुनिया यह मानती है कि चीन एक धोखेबाज देश है और अपने स्वार्थ के लिए वह किसी को कहीं भी धोखा दे सकता. है. चीन का यह इतिहास रहा है कि उसने अपने स्वार्थ के लिए निकटतम मित्रों को धोखा दिया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जी-जान से यह प्रयास किया कि चीन के साथ संबंध मधुर हों, परंतु चीन कहता कुछ और है, करता कुछ और. सीमा विवाद में तो उसने भारत को भयानक धोखा तब दिया जब चीन ने हथियाई हुई हजारों किलोमीटर जमीन को खाली करने से मना कर दिया. यही नहीं, उसने अनायास ही अरुणाचल प्रदेश पर दावा ठोंक दिया. यहां तक कि जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चीन गए थे तब चीन के सरकारी टेलीविजन ने भारत का जो मानचित्र प्रकाशित किया था उसमें अरुणाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर को भारत का अंग नहीं बताया था.

भारत के बार-बार जोर देने पर भी चीन यही रट लगाए हुए है कि अरुणाचल प्रदेश चीन का ही हिस्सा है. उसका कहना है कि अरुणाचल प्रदेश तिब्बत का हिस्सा है और अब जब तिब्बत चीन का हिस्सा है, स्वाभाविक रूप से अरुणाचल प्रदेश उसका अंग है. दलाई लामा ने जोर देकर कहा है कि अरुणाचल प्रदेश कभी तिब्बत का हिस्सा नहीं था. परंतु यह चीन मानने को तैयार नहीं है. जब-जब भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या कोई विशिष्ट नेता अरुणाचल प्रदेश जाते हैं तो चीन उसका घोर विरोध करता है. भारत के लाख मना करने के बावजूद चीन ने अरुणाचलवासियों को 'नत्थी वीजा' यह कहकर देना जारी रखा है कि अरुणाचल प्रदेश तो चीन का ही भाग है.

हमारी गलती तो तभी हो गई जब 1950 में चीन ने तिब्बत को हड़प लिया. पंडित नेहरू ने निश्चय ही इतिहास का गहन अध्ययन किया था. परंतु चीन के मामले में उनका ज्ञान और अध्ययन अधूरा था. पंडित नेहरू यह समझते थे कि भारत और चीन दोनों पश्चिमी उपनिवेशवादी ताकतों के सताए हुए हैं और जब दोनों देश आजाद होंगे तो सगे भाइयों की तरह एशिया की राजनीति में सक्रिय होंगे. पंडित नेहरू का यह भी मानना था कि बौद्ध धर्म भारत से ही चीन गया था. इसलिए उसे याद करके भी चीन अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का साथ देगा. परंतु वे घोर गलतफहमी का शिकार हो गए.

भारत सोच रहा था कि चीन धीरे धीरे रास्ते पर आ जाएगा. परंतु हाल में संयुक्त राष्ट्र में जिस तरह उसने भारत के खिलाफ पाकिस्तान का साथ दिया उससे भारत ही नहीं, पूरी दुनिया आश्चर्यचकित रह गई. चीन ने संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान का साथ देते हुए मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड जकीउर रहमान लखवी के खिलाफ कार्रवाई का प्रस्ताव रोक दिया. उसने अत्यंत निर्लज्जता से पाकिस्तान का साथ दिया और कहा कि भारत ने पर्याप्त सबूत नहीं दिए हैं. चीन की इस कार्रवाई से लखवी के खिलाफ कार्रवाई नहीं करने पर अड़े पाकिस्तान को नैतिक समर्थन मिला और पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई रुक गई है. सुरक्षा परिषद के अन्य चारों सदस्य अमेरिका, रूस, फ्रांस और ब्रिटेन ने लखवी की रिहाई का विरोध किया. परंतु चीन ने उनकी एक नहीं मानी और अत्यंत ही निर्लज्जता से पाकिस्तान का साथ दिया. ■■

मुझे जीने दो

मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा, क्यों मारने पे तुले हो मुझे? मैंने तो हमेशा तुम सबका भला ही किया है. हमेशा तुम्हें दिया ही है कभी कुछ लिया हो तो बताओ.

जब तुम छोटे थे तब मैं तुम्हारा साथी बना. कितने लुका-छिपी खेले हैं हम साथ, और भूल गए, कितने ही सावन तुमने मेरी गोद में झूला झूल के गुजारे हैं!

लघुकथा

प्रिया मिश्रा

जब भी धूप होती थी मैं खुद तप कर तुम्हें छाया देता था. क्या एक बार भी तुम्हें वो सब स्मरण नहीं हुआ? क्या एक बार भी ये नहीं सोचा कि मेरे जाने के बाद मुझ पर आश्रित उन बेगुनाहों का क्या होगा?

आह!

नहीं!

मै तो जा रहा हूं और जानता हूं तुम्हें अफसोस भी न होगा. आखिर तुम्हारे लिए मै एक पेड़ मात्र जो हूं. पर याद रखना, अगर तुम मनुष्य ऐसे ही अपने स्वार्थ के लिए मुझे मारते रहे तो तुम भी नहीं जी सकोगे. आखिर श्वास भी तो मेरी दी हुई ही लेते हो. मेरे जाने के बाद उसे कहां से लाओगे? ■■

तोल बोल

नैतिकता के स्वयं-भू मसीहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में हिम्मत नहीं है कि वह वसुंधरा राजे और सुषमा स्वराज के खिलाफ कार्रवाई करें.

■ **जयराम रमेश**, कांग्रेस नेता

जब किसी प्रकार का दबाव नहीं होता है तो जीवन आलसी हो जाता है. ऐसे में आप नया कुछ करने की कोशिश करते हैं तो असफल हो जाते हैं.

■ **शाहरुख खान**, फिल्म अभिनेता

© लोकमत समाचार
P.O.BOX NO. 230 R.N.I. No. 47101/89
0712-2423527 (7) 6618555
Email : lsedit.ngp@lokmat.com
advt.ngp@lokmat.com circ.ngp@lokmat.com

इतिहास पर नजर 2 जुलाई

आज ही के दिन 1964 में अमेरिकी इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण विधेयकों में से एक नागरिक हितों की रक्षा करने वाला प्रस्ताव कानून में तब्दील हुआ था. अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन बी जॉनसन ने इस विधेयक पर हस्ताक्षर किए जिससे देश में मताधिकार, शिक्षा, सार्वजनिक रिहाइश जैसे अधिकार जाति, धर्म और राष्ट्रीयता के आधार के बिना सबको प्राप्त हुए. जब से पूर्व राष्ट्रपति जॉन केनेडी ने इसके पिछले वर्ष यानी 1963 में इस विधेयक को प्रस्तावित किया था तभी से ये विवादों के घेरे में रहा था कानून पर हस्ताक्षर करने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन बी जॉनसन ने नागरिक अधिकारों के हित की बात करने वाले नेता मार्टिन लूथर किंग से हाथ मिलाया. टीवी पर राष्ट्र को किए गए एक संबोधन में राष्ट्रपति जॉनसन ने अमेरिकी नागरिकों से कहा था, 'इस कानून से अमेरिका में नाइंसाफी समाप्त हो जाएगी.' ■■

- 1757-मोहम्मद बेग ने सिराजुद्दौला का कत्ल किया.
- 1897-इतालवी वैज्ञानिक गुगलेल्मो मारकोनी को लंदन में रेडियो का पेटेंट मिला.
- 1916-भारतीय प्राणि सर्वेक्षण विभाग की स्थापना.
- 1940-सुभाष चंद्र बोस को गिरफ्तार कर कलकत्ता (कोलकाता)भेजा गया.
- 1983-मद्रास के निकट कलपक्कम में परमाणु संयंत्र की पहली इकाई ने काम करना प्रारंभ किया.

पाठकों के पत्र

धर्म की परिभाषा

धर्म मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर या गुरुद्वारा तक सीमित नहीं रहता. वास्तव में सबका धर्म एक होता है. आत्मबोध प्राप्त कर, तद्नुसार आचरणबद्ध होना ही सच्चा मानव धर्म साकार करना है. सत्य तो यह है कि प्राणी मात्र की सेवा करना, सबको अपना समझना ही वास्तविक मानव धर्म है.

धर्म शिक्षा का मेरुदंड है. धर्म के बिना शिक्षा अधूरी है. तीन लोकों के नायक सद्गुरु अथवा परमात्मा के विधान अनुसार जीवन क्रियान्वित हो जाए, उसे धर्म कहते हैं. धर्म कल्पना की वस्तु नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष दर्शन की वस्तु है. धर्म ढोंग नहीं, कर्तव्य पालन है. कर्तव्य के ज्ञान अनुसार कर्म होना चाहिए. धर्म की परिभाषा पीड़ा हरना है न कि पीड़ा देना. अगर धर्म की इस परिभाषा को मानकर दुनिया चले तो कहीं झगड़ा-फसाद होने का सवाल ही न पैदा हो और अमन-चैन कायम रहे.

■ रजैया सोमलवार 'निरंकारी', नागपुर

अहं का त्याग

एक राजा ने परमात्मा को खोजना चाहा. वह किसी आश्रम में गया. उस आश्रम के प्रधान साधु ने कहा, ''जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे छोड़ दो. परमात्मा को पाना तो बहुत सरल है.''

राजा ने यही किया. उसने राज्य छोड़ दिया और अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दी. लेकिन साधु ने उसे देखते ही कहा, ''अरे, तुम तो सभी कुछ साथ ले आए हो!''

राजा की समझ में कुछ नहीं आया, पर वह बोला नहीं. साधु ने आश्रम की सफाई का काम उसे सौंपा. आश्रमवासियों को यह बहुत कठोर लगा, किंतु साधु ने कहा, ''सत्य को पाने के लिए राजा अभी तैयार नहीं है और इसका तैयार होना तो बहुत ही जरूरी है.''

विविध

कुछ दिन बाद आश्रमवासियों ने साधु से कहा कि राजा को कठोर काम से छुट्टी देने के लिए उसकी परीक्षा ले लें.

अगले दिन राजा जब कचरे की टोकरी सिर पर लेकर जा रहा था तो एक आदमी उससे टकरा गया. राजा बोला, ''आज से पंद्रह दिन पहले तुम इतने अंधे नहीं थे.''

साधु ने कहा, ''मैंने कहा था न कि अभी समय नहीं आया है. वह अभी वही है.''

कुछ दिन बाद फिर राजा से कोई राहगीर टकरा गया. इस बार राजा ने आंखें उठाकर उसे सिर्फ देखा, कहा कुछ भी नहीं. फिर भी आंखों ने जो कहना था, कह ही दिया.

तीसरी बार फिर यही घटना हुई. इस बार राजा ने रास्ते में बिखरे कूड़े को बटोरा और आगे बढ़ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो. उस दिन साधु बोला, ''अब यह तैयार है. जो अहं को छोड़ देता है, वही प्रभु को पाने का अधिकारी होता है.'' ■■